International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 02(II), April- June, 2026, pp. 91-99

21वीं सदी में भारत– रूस संबंध

परबत सिंह*

सहायक आचार्य– राजनीति विज्ञान, श्री धनराजजी श्रीचंदजी बदामिया कॉलेज ऑफ़ प्रोफेशनल स्टडीज, वरकाणा।

*Corresponding Author: parbatsinghpali@gmail.com

Citation: सिंह, परबत (2026). 21वीं सदी में भारत– रूस संबंध. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(02(I)), 91–99. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.2(II).9037

सार

21वीं सदी में भारत–रूस संबंध अंतरराष्ट्रीय राजनीति की सबसे स्थायी और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण साझेदारियों में से एक रहे हैं। वैश्विक भू–राजनीतिक परिवेश में व्यापक परिवर्तनों के बावजूद दोनों देशों ने रक्षा, ऊर्जा, व्यापार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष अनुसंधान तथा बहुपक्षीय कूटनीति जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग को निरंतर सुदृढ़ किया है। यह संबंध पारस्परिक विश्वास, साझा रणनीतिक हितों तथा बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के प्रति प्रतिबद्धता पर आधारित है। यह शोध–पत्र 21वीं सदी में भारत–रूस संबंधों के विकास का विश्लेषण करता है तथा उन प्रमुख घटनाओं, अवसरों और चुनौतियों का अध्ययन प्रस्तुत करता है जिन्होंने द्विपक्षीय संबंधों को प्रभावित किया है। यथार्थवादी एवं रणनीतिक दृष्टिकोणों के आधार पर यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि दोनों देशों ने चीन के उदय, हिंद–प्रशांत क्षेत्र की बदलती परिस्थितियों तथा अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति–संतुलन के परिवर्तन जैसी उभरती वैश्विक चुनौतियों के अनुरूप अपनी साझेदारी को किस प्रकार अनुकूलित किया है। शोध में रक्षा सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा तथा कूटनीतिक समन्वय की भूमिका का भी मूल्यांकन किया गया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि भारत–रूस संबंध भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बने हुए हैं तथा क्षेत्रीय स्थिरता और वैश्विक रणनीतिक संतुलन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

शब्दकोशः *भारत–रूस संबंध, रणनीतिक साझेदारी, विदेश नीति, रक्षा सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था, भू–राजनीति, अंतरराष्ट्रीय संबंध, ऑपरेशन सिंदूर, मोदी पुतिन दोस्ती, नए युग में भारत रूस संबंध।*

प्रस्तावना

भारत और रूस के आपसी संबंध वर्तमान समय में चर्चा का विषय बना हुआ है साथ ही दोनों राष्ट्रों के लिए यह आपसी संबंध अति महत्वपूर्ण भी है पिछले कहीं वर्षों से राजनीतिक तथा सामरिक सहयोग, सैन्य एवं सुरक्षा सहयोग, अर्थव्यवस्था, ऊर्जा, उद्योग, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, आदि क्षेत्रों में सहयोग के व्यापक पहलुओं पर दोनों राष्ट्र मिलकर कार्य कर रहे हैं।

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

भारत और सोवियत संघ के बीच पहला महत्वपूर्ण समझौता 9 अगस्त 1971 को 'शांति, मैत्री और सहयोग की संधि' (ज्तमंजल व िच्मंबम, थ्तपमदकेीपच ंदक ब्वबचमतंजपवद) थी, जिसने शीत युद्ध के दौरान दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को मजबूत किया और 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी; इसके बाद, सोवियत संघ के विघटन के बाद 1993 में भारत–रूस मैत्री और सहयोग की नई संधि हुई।

21वीं सदी में भारत–रूस संबंधों के बदलते रुझान को देखा जा सकता है,

हाल ही में भारत और रूस ने अपने राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगाँठ मनाई एवं हाल ही में हुए ऑपरेशन सिंदूर एवं भारत द्वारा रुस से कच्चा तेल खरीदने के कारण अमेरिका द्वारा लगाए गए टैरिफ के बाद दोनों देशों की साझेदारी की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा हो रही है।

हाल ही में रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भारत का दौरा भी किया है।

वहीं दूसरी तरफ इतिहास पर दृष्टि डाले तो–

सोवियत नेता स्टालिन के अनुसार, 'जो समाजवाद के साथ नहीं है, वह पूंजीवादी है।' अतः स्टालिन ने भारत एवं पंडित जवाहरलाल नेहरू को पूंजीवादी व्यवस्था का समर्थक माना। अतः आरंभ में भारत–सोवियत संघ के बीच संबंध मित्रतापूर्ण नहीं थे।

- **मित्रतापूर्ण संबंधों की शुरूआत**

वर्ष 1953 में सोवियत संघ में खुश्चेव ने शासन सत्ता संभाली और उन्होंने शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की मान्यता को स्वीकार किया तथा यह भी माना कि भारत पूंजीवादी व्यवस्था का समर्थक नहीं है। उन्होंने भारत की गुटनिरपेक्ष विदेश नीति का समर्थन किया तथा कश्मीर मुद्दे पर भी भारतीय दृष्टिकोण का समर्थन किया।

- **मधुर मित्रतापूर्ण सामरिक संबंधों का विकास**

भारत–सोवियत संघ के बीच वर्ष 1971 की शाति और मित्रता संधि के बाद संबंधों में गुणात्मक परिवर्तन हुआ। शीतयुद्ध के दौर में भारत–सोवियत संघ का सबसे बड़ा सामरिक सहयोगी बन गया। वर्ष 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध के दौरान सोवियत संघ ने भारत को खुफिया सूचनाओं उपलब्ध कराई तथा संयुक्त राष्ट्र संघ सुरक्षा परिषद में भी भारत का समर्थन किया।

- **शीतयुद्ध के बाद भारत–रूस संबंध**

वर्ष 1991 के बाद के विश्व में भारत–रूस के द्विपक्षीय व्यापार रुपये और रूबल पर आधारित नहीं रहे, बल्कि दोनों के बीच डॉलर के द्वारा व्यापार होने लगा। शीतयुद्ध के बाद विश्व में भारत और रूस के संबंध यथार्थ, व्यावहारिकता तथा पारस्परिकता पर आधारित है, वैचारिक सुदृढ़ता इसका आधार नहीं है।

भारत–रूस संबंधों के संदर्भ में आधारभूत तत्व

- **ऐतिहासिक पृष्ठभूमि**

भारत और रूस के संबंध काफी पुराने हैं। अक्बतूर 2000 में "भारत–रूस सामरिक साझेदारी घोषणा" पर हस्ताक्षर करने के बाद से, भारत–रूस संबंधों ने राजनीतिक, सुरक्षा, रक्षा, व्यापार और अर्थव्यवस्था, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, तथा संस्कृति सहित द्विपक्षीय संबंधों के लगभग सभी क्षेत्रों में सहयोग के बढ़े हुए स्तरों के साथ एक गुणात्मक रूप से नया स्वरूप देखा गया है।

शीत युद्ध के दौरान, भारत और सोवियत संघ के बीच एक मज़बूत रणनीतिक, सैन्य, आर्थिक और राजनयिक संबंध थे। सोवियत संघ के विघटन के बाद, रूस को भारत के साथ अपने घनिष्ठ संबंध विरासत में मिले, जिसके परिणामस्वरूप दोनों देशों ने एक विशेष सामरिक संबंध साझा किया।

हालाँकि, पिछले कुछ वर्षों में खासकर पोस्ट–कोविड परिदृश्य में संबंधों में भारी गिरावट आई है। इसका सबसे बड़ा कारण रूस के चीन और पाकिस्तान के साथ घनिष्ठ संबंध हैं, जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में भारत के लिए कई भू–राजनीतिक मुद्दों का कारण बना दिया है।

- **राजनीतिक संबंध**

भारत के प्रधानमंत्री और रूसी संघ के राष्ट्रपति के बीच वार्षिक शिखर सम्मेलन भारत और रूस के बीच रणनीतिक साझेदारी में सर्वोच्च संस्थागत वार्ता तंत्र है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने वर्ष 2018 में रूसी संघ के सोची शहर में अपना पहला अनौपचारिक शिखर सम्मेलन आयोजित किया।

वर्ष 2019 में, राष्ट्रपति पुतिन ने च्ड नरेंद्र मोदी को रूस के सर्वोच्च सम्मान – "ऑर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू द एपोस्टल" प्रदान किया। रूस और भारत के बीच एक विशेषाधिकार प्राप्त रणनीतिक साझेदारी के विकास और रूसी और भारतीय लोगों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों के विकास में उनके विशिष्ट योगदान के लिये प्रधानमंत्री को यह समान प्रदान किया गया था।

दो अंतर–सरकारी आयोग की वार्षिक बैठक होती है – पहला व्यापार, आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सहयोग (प्ळब्–ज्म्ब्) पर, और दूसरा सैन्य–तकनीकी सहयोग (प्ळब्–डज्ब्) पर।

- **व्यापारिक संबंध**

दोनों देश वर्ष 2026 के अंत तक द्विपक्षीय निवेश को 50 अरब अमेरिकी डॉलर और द्विपक्षीय व्यापार को 30 अरब अमेरिकी डॉलर तक बढ़ाने का ज़ोर दे रहे हैं।

वित्त वर्ष 2020 के दौरान द्विपक्षीय व्यापार 8.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर का था।

2013 से 2016 तक दोनों देशों के बीच व्यापार प्रतिशत में बड़ी गिरावट आई थी। हालाँकि, यह 2017 से बढ़ा और 2018 और 2019 में भी लगातार वृद्धि देखी गई।

- **रक्षा और सुरक्षा संबंध**

भारत–रूस सैन्य–तकनीकी सहयोग एक क्रेता–विक्रेता ढाँचे से विकसित हुआ है जिसमें उन्नत रक्षा प्रौद्योगिकियों और प्रणालियों के संयुक्त अनुसंधान, विकास और उत्पादन शामिल हैं।

दोनों देश नियमित रूप से त्रि–सेवा अभ्यास 'इंद्र' आयोजित करते हैं।

भारत और रूस निम्नलिखित संयुक्त सैन्य कार्यक्रमों में शामिल हैं, जो दोनों देशो के अच्छे अंतरराष्ट्रीय संबंध के साक्षी हैंः–

- ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल कार्यक्रम
- 5वीं पीढ़ी का लड़ाकू जेट कार्यक्रम
- सुखोई एसयू–30एमकेआई कार्यक्रम
- इल्यूशिन/एचएएल सामरिक परिवहन विमान
- ज्ञ।–226ज् ट्विन–इंजन यूटिलिटी हेलीकॉप्टर
- भारत द्वारा रूस से खरीदे/पट्टे पर लिये गए सैन्य हार्डवेयर में शामिल हैंः

एस–400 ट्रायम्फ (सुदर्शन चक्र),

मेक इन इंडिया पहल के तहत भारत में बनेगी 200 कामोव ज्ञं–226 ,

टी–90एस भीष्म

- **आईएनएस विक्रमादित्य विमान वाहक कार्यक्रम**

  भारत द्वारा संचालित एकमात्र विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रमादित्य भी मूल रूप से रूस का है।

  भारत द्वारा संचालित चौदह पारंपरिक पनडुब्बियों में से नौ रूस की हैं।

- रूस अपने पनडुब्बी कार्यक्रमों में भारतीय नौसेना की सहायता करने में भी बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता हैः

  भारतीय नौसेना की पहली पनडुब्बी, 'फॉक्सट्रॉट क्लास' रूस से ली गई थी।

- **भारत अपने परमाणु पनडुब्बी कार्यक्रम के लिये रूस पर निर्भर है।**

भारत और रूस के बीच संबंधों के अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्रः

- **परमाणु संबंध**

परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के क्षेत्र में रूस भारत का महत्त्वपूर्ण भागीदार है। यह भारत को एक मतभेद रहित अप्रसार रिकॉर्ड के साथ उन्नत परमाणु प्रौद्योगिकी वाले देश के रूप में मान्यता देता है।

वर्ष 1974 के बाद भारत और रूस के बीच परमाणु क्षेत्र में उल्लेखनीय सहयोग हुआ। वर्ष 1974 के परमाणु परीक्षण के बाद सभी पश्चिमी देशों ने भारत के परमाणु कार्यक्रम पर प्रतिबंध लगा दिया था, परंतु इसके बाद भी सोवियत संघ के द्वारा भारत को परमाणु ऊर्जा के विकास में सहायता प्रदान की गई।

रुस के सहयोग से कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र (ज्ञज्ञछच्च्) भारत में बनाया जा रहा है। तथा रूस, भारत को परमाणु ईंधन देने वाला एक प्रमुख राष्ट्र है।

भारत और रूस दोनों बांग्लादेश में रूपपुर परमाणु ऊर्जा परियोजना को स्थापित कर रहे हैं।

- **अंतरिक्ष अन्वेषण**

दोनों पक्ष बाहरी अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण उपयोग में सहयोग करते हैं जिसमें उपग्रह प्रक्षेपण, ग्लोनास नेविगेशन प्रणाली (ळस्व्छ।े दंअपहंजपवद `लेजमउ), रिमोट सेंसिंग और बाह्य अंतरिक्ष के अन्य सामाजिक अनुप्रयोग शामिल हैं।

19वें द्विपक्षीय शिखर सम्मेलन के दौरान मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम के क्षेत्र में संयुक्त गतिविधियों पर एक समझौता ज्ञापन इसरो और रोस्कोसमोस द्वारा किये गए।

- **विज्ञान और तकनीक**

प्त्ळढ़–ज्म्ब के तहत कार्य कर रहे विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी पर कार्य समूह, एकीकृत दीर्घकालिक कार्यक्रम (प्स्ज्च्) और बुनियादी विज्ञान सहयोग कार्यक्रम द्विपक्षीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी सहयोग हेतु तीन मुख्य संस्थागत तंत्र हैं, जबकि दोनों देशों की विज्ञान अकादमियाँ अंतर–अकादमी आदान–प्रदान हेतु इसे बढ़ावा देती हैं।

इस क्षेत्र में कई नई पहलों में भारत–रूस ब्रिज़ टू इनोवेशन, टेलीमेडिसिन में सहयोग, पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी (ज्ञक्स्) का निर्माण और विश्वविद्यालयों के रूस इंडिया नेटवर्क (त्प्छ) शामिल हैं।

- **सांस्कृतिक संबंध**

प्रमुख विश्वविद्यालयों और स्कूलों सहित लगभग 20 रूसी संस्थान में नियमित रूप से लगभग 1500 रूसी छात्रों को हिंदी पढ़ाई जाती हैं। हिंदी के अलावा, रूसी संस्थानों में तमिल, मराठी, गुजराती, बंगाली, उर्दू, संस्कृत और पाली जैसी भाषाओं को पढ़ाया जाता है।

भारतीय नृत्य, संगीत, योग और आयुर्वेद कुछ अन्य रुचियों में से हैं जिनका रूस के लोग रूचि रखते हैं।

लोगों में आदान–प्रदान को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2008 में भारत में रूसी वर्ष तथा वर्ष 2009 में रूस में भारत वर्ष मनाया गया।वर्ष 2011 में रवीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती के अवसर पर रूस में भारतीय संस्कृति का उत्सव तथा वर्ष 2012 में भारत में रूसी संस्कृति का उत्सव मनाया गया, क्योंकि वर्ष 2012 में भारत एवं रूस के कूटनीतिक संबंधों की स्थापना के 65 वर्ष हो गए। रूस में लगभग 15,000 भारतीय मूल के लोग निवास करते हैं तथा लगभग 4,500 भारतीय विद्यार्थी रूस की मेडिकल एवं तकनीकी संस्थाओं में अध्ययन कर रहे हैं।

दोनों देश पारस्परिक सांस्कृतिक संबंधों के विकास पर कार्य कर रहे हैं, जिसका दोनों देशों के अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेग।

वर्तमान समय में भारत के लिये रूस का महत्त्व

- **चीन को संतुलित करनाः** पूर्वी लद्दाख के सीमावर्ती क्षेत्रों में चीनी आक्रमण ने भारत–चीन संबंधों को एक मोड़ पर ला दिया, इससे यह भी प्रदर्शित हुआ कि रूस चीन के साथ तनाव को कम करने में योगदान दे सकता है, क्योंकि रूस तथा चीन में अच्छे मित्रता है।लद्दाख के विवादित क्षेत्र में गलवान घाटी में घातक झड़पों के बाद रूस ने रूस, भारत और चीन के विदेश मंत्रियों के बीच एक त्रिपक्षीय बैठक आयोजित की।
- **आर्थिक जुड़ाव के उभरते नए क्षेत्रः–** हथियार, हाइड्रोकार्बन, परमाणु ऊर्जा और हीरे जैसे सहयोग के पारंपरिक क्षेत्रों के अलावा, आर्थिक जुड़ाव के नए क्षेत्रों के उभरने की संभावना है – खनन, कृषि–औद्योगिक और उच्च प्रौद्योगिकी, जिसमें रोबोटिक्स, नैनोटेक, और बायोटेक। रूस के सुदूर पूर्व और आर्कटिक में भारत के पदचिन्हों का विस्तार होना तय है। कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट्स को भी बढ़ावा मिल सकता है।
- **आतंकवाद का मुकाबलाः–** भारत और रूस अफगानिस्तान के बीच की खाई को पाटने हेतु कार्य कर रहे हैं और दोनों देशों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक सम्मेलन को जल्द से जल्द अंतिम रूप देने का आह्वान किया गया है।
- **बहुपक्षीय मंचों पर समर्थनः–** इसके अतिरिक्त रूस संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (न्ैब्) और परमाणु आपूर्तिकर्त्ता समूह (छैळ) की स्थायी सदस्यता के लिये भारत की उम्मीदवारी का समर्थन करता है।
- **रूस का सैन्य निर्यातः–** रूस भारत के लिये सबसे बड़े हथियार निर्यातकों में से एक रहा है। यहाँ तक कि पिछले पाँच वर्षों (2011–2015) की तुलना में पिछले पाँच साल की अवधि में भारत के हथियारों के आयात में रूस की हिस्सेदारी 50þ से अधिक गिर गई।

वैश्विक हथियारों के व्यापार पर नज़र रखने वाले स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के अनुसार, पिछले 20 वर्षों में भारत ने रूस से 35 बिलियन अमेरिकी डॉलर के हथियार आयात किये हैं।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में भारतीय विदेश नीति के तौर पर रूस के साथ विशेष तौर से अच्छे अंतरराष्ट्रीय संबंध मजबूत विदेश नीति का उदाहरण है, रूस का संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थाई सदस्य होने के कारण भारत के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हो रहा है

ऑपरेशन सिंदूर

भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा पाकिस्तान और च्वश्र में आतंकी ठिकानों पर 6–7 मई 2025 की रात को किये गये हवाई अभियान के बाद भारत अपने परम मित्र रुस को एक विश्वास और आशा की नजर से देख रहा था।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद विश्व स्तर पर भारत की मजबूत विदेश नीति एवं एवं दुनिया के तमाम देशों के साथ में अच्छे अंतरराष्ट्रीय संबंधों का परिणाम देखने को मिला

ऑपरेशन सिंदूर (मई 2025) में रूस ने भारत के पारंपरिक रक्षा भागीदार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, खासकर मिसाइल (ब्रह्मोस), वायु रक्षा प्रणालियों (आकाश, सुदर्शन चक्र/ै–400), और अन्य रूसी तकनीकों के माध्यम से भारत की सैन्य क्षमताओं को बढ़ाया, हालांकि, रूस ने इस दौरान एक तटस्थ रुख अपनाया और तनाव कम करने की अपील की, जो यूक्रेन युद्ध और चीन के बढ़ते प्रभाव के कारण बदला हुआ भू–राजनीतिक परिदृश्य दर्शाता है, जहाँ रूस ने दोनों देशों से संबंध बनाए रखने की कोशिश की,लेकिन ऑपरेशन के दौरान रूस ने रणनीतिक स्तर पर भारत को जरूरी लॉजिस्टिक और तकनीकी सहायता प्रदान की, जिससे भारत की हवाई सुरक्षा मजबूत हुई।

ऑपरेशन सिंदूर में रूस की भूमिका

- रक्षा सहयोगः रूस ने भारत को अत्याधुनिक रूसी रक्षा प्रणालियाँ, जैसे ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल (भारत–रूस संयुक्त परियोजना), आकाश मिसाइल प्रणाली, और अन्य लड़ाकू विमानों की आपूर्ति की, जो ऑपरेशन की सफलता के लिए महत्वपूर्ण थे।
- तकनीकी सहायताः रूस ने भारत को इलेक्ट्रॉनिक युद्ध और वायु रक्षा प्रणालियों में तकनीकी सहायता प्रदान की, जिससे भारतीय सेना को निर्णायक बढ़त मिली।
- तटस्थता और मध्यस्थताः रूस ने भारत–पाकिस्तान तनाव के दौरान सीधे पक्ष लेने के बजाय, तनाव कम करने और बातचीत के माध्यम से समाधान खोजने की अपील की।
- बदलता भू–राजनीतिक रुखः रूस की यह तटस्थता कई विश्लेषकों के लिए आश्चर्यजनक थी, क्योंकि वह हमेशा से भारत का मजबूत सहयोगी रहा है। कुछ विशेषज्ञों का मानना था कि यूक्रेन युद्ध में भारत के रुख और चीन के साथ रूस की बढ़ती नजदीकी, इस बदलते रुख का कारण थी।

निष्कर्ष

रूस ने ऑपरेशन सिंदूर में अपनी रक्षा प्रौद्योगिकी से भारत का समर्थन किया, लेकिन भू–राजनीतिक कारणों से प्रत्यक्ष सैन्य समर्थन के बजाय तटस्थता का रुख अपनाया, जिससे यह ऑपरेशन भारत की स्वदेशी और रूसी हथियारों की ताकत का प्रदर्शन बन गया। हालांकि ऑपरेशंस सिंदूर में इसराइल ने खुलकर भारत का समर्थन किया था ऑपरेशन सिंदूर ने भारत के मजबूत अंतरराष्ट्रीय संबंधों के के परिणाम को नजदीक से देखा है।

नय युग में भारत –रुस संबंध

भारत और रूस के बीच संबंधों में हाल के दिनों में कई महत्वपूर्ण घटनाएं देखने को मिली है जो निम्नानुसार है–

- रूस द्वारा भारत कोै–350 एयर डिफेंस सिस्टम का ऑफर देना :– यहै–400 का पूरक है। यह ऑफर ऐसे समय में आया है जब भारतै–500 में दिलचस्पी दिखा रहा है ।
- भारत और रूस के बीचैन–57 लड़ाकू विमान की डील :– इस डील पर बातचीत चल रही है। रूस ने भारत कोैन–57म् गिफ्ट भी दिया है, जो टेक्नोलॉजी ट्रांसफर और भारत में फाइटर जेट निर्माण की संभावनाओं को बढ़ाता है ।
- रूस द्वारा भारत को 98स्6 ल्मदपेमप रडार देने का ऑफरः– यहै–400 को और अधिक खतरनाक बनाएगा। यह रडार थ्–35 और श्र–35 जैसे स्टील्थ विमानों को भी पकड़ सकता है ।
- भारत और रूस के बीच व्यापार में बढ़ोतरी– व्यापार को दोनों देशों के मध्य व्यापार को बढ़ावा देने के लिए 100 अरब डॉलर का लक्ष्य रखा गया है। दोनों देश नेशनल करेंसी में व्यापार करने पर भी विचार कर रहे हैं ।

- राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन कि भारत यात्रा :– राष्ट्रपति पुतिन ने हाल ही में भारत का दौरा किया था, जिसमें दोनों देशों ने आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में सहयोग बढ़ाने पर सहमति जताई है,एवं अमेरिका द्वारा भारत पर लगाए गए टैरिफ पर राष्ट्रपति पुतिन ने मीडिया के सामने खुले मंच पर भारत का समर्थन किया है, जो दोनों देशों के मध्य मजबूत अंतरराष्ट्रीय संबंधों का एक उदाहरण है।

अंतरराष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव

वैश्विक भू–राजनीतिक उथल–पुथल, विशेष रूप से रूस–यूक्रेन संघर्ष और भारत–अमेरिका संबंधों में हाल की तनातनी, ने इस साझेदारी को और महत्वपूर्ण बना दिया है। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (छै।) अजित डोभाल की हालिया मॉस्को यात्रा और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के साथ उनकी मुलाकात ने इस साझेदारी को नए आयाम दिए हैं।

इन बिंदुओं से पता चलता है कि भारत और रूस के बीच संबंध मजबूत हो रहे हैं और दोनों देश विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ तथा भारत रूस संबंध

विश्व के सबसे बड़े संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत और रूस के बीच संबंध बहुत मजबूत हैं, और दोनों देश संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएनओ) में एक–दूसरे का समर्थन करते हैं। रूस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) में भारत की स्थायी सदस्यता का समर्थन किया है, जो भारत की वैश्विक महत्वाकांक्षाओं को बढ़ावा देता है ,

भारत और रूस ने विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की है, दोनों राष्ट्रों ने आतंकवाद तथा पर्यावरण प्रदूषण को वर्तमान में विश्व स्तर की प्रमुख समस्या बताया है दोनों देशों ने संयुक्त राष्ट्र में उठाए जाने वाले मुद्दों पर उच्च स्तरीय राजनीतिक संवाद और सहयोग को मजबूत करने का भी निर्णय लिया है

रूस ने भारत की जी20 अध्यक्षता का समर्थन किया है और दोनों देशों ने ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) के ढांचे में सहयोग बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की है। भारत और रूस ने संयुक्त राष्ट्र में सुधारों की आवश्यकता पर भी जोर दिया है, ताकि यह समकालीन वैश्विक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित करे ।

भारत और रूस के बीच संबंधों का भविष्य उज्ज्वल दिख रहा है, और दोनों देश वैश्विक शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं

भारत और रूस की विदेश नीति का भविष्य

भारत और रूस की विदेश नीति का भविष्य गहरे रणनीतिक सहयोग, आर्थिक विस्तार और बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में साझा हितों पर केंद्रित है, जिसमें रक्षा, ऊर्जा (विशेषकर तेल) और आर्कटिक सहयोग पर ज़ोर है, लेकिन व्यापार को +100 बिलियन तक ले जाने और तकनीकी निर्भरता कम करने के लिए चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे भविष्य में 'विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त' साझेदारी की उम्मीद है। इस प्रकार भारत और रूस की विदेश नीति का भविष्य रणनीतिक स्वायत्तता (जतंजमहपब नजवदवउल) और बहु–ध्रुवीय (उनसजपचवसंत) विश्व व्यवस्था पर आधारित है।

प्रमुख पहलू और भविष्य की दिशाः

- आर्थिक सहयोगः 2030 तक +100 बिलियन के व्यापार लक्ष्य के साथ, भारत रूस से तेल आयात बढ़ा रहा है और ऊर्जा, खनन, कृषि जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ा रहा है।
- रक्षा संबंधः ै–400 मिसाइल सिस्टम और दीर्घकालिक सैन्य तकनीकी सहयोग (2031 तक विस्तारित) जैसे सौदों से रक्षा साझेदारी मजबूत है, लेकिन भारत अब स्थानीय उत्पादन और तकनीकी आत्मनिर्भरता पर भी ध्यान दे रहा है।

- रणनीतिक साझेदारीः दोनों देश बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में अपने प्रभाव को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं, जहां भारत रूस को चीन के पाले में जाने से रोकने में मदद करता है।
- आर्कटिक क्षेत्रः भारत आर्कटिक में रूस के साथ साझेदारी कर रहा है, खासकर आर्कटिक क्षेत्र के विकास और उत्तरी समुद्री मार्ग (छैत्) पर सहयोग के लिए।
- चुनौतियाँः पश्चिमी देशों का दबाव, ऊर्जा और प्रौद्योगिकी पर निर्भरता, और रूस–यूक्रेन युद्ध के बाद के भू–राजनीतिक बदलाव रिश्ते में जटिलताएँ लाते हैं, जिससे सरकार–से–सरकार संबंधों से आगे बढ़कर लोगों के बीच जुड़ाव और आर्थिक संबंधों को मजबूत करने की आवश्यकता है। रूस से कच्चा तेल खरीदने के कारण अमेरिका द्वारा भारत पर लगाया गया टैरिफ दोनों देशों के मध्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए एक चुनौती बना हुआ है।
- भविष्य की दिशाः यह साझेदारी रक्षा और ऊर्जा से आगे बढ़कर प्रौद्योगिकी, नवाचार और 'लोगों से लोगों के बीच' संबंधों तक विस्तार कर रही है, जिससे भविष्य में 'रणनीतिक साझेदारी' से 'विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त बॉन्ड' में बदलने की उम्मीद है।

निष्कर्ष

भारत और रूस की विदेश नीति का भविष्य आपसी विश्वास, आर्थिक अवसरों और वैश्विक मंच पर अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखने की साझा इच्छा पर टिका है, हालाँकि इसमें कुछ जटिलताएँ और चुनौतियाँ भी हैं।

भारत और रूस की मित्रता को आगे बढ़ाने हेतु उपाय–

भारत और रूस की मित्रता को गहरा करने के लिए व्यापार विविधीकरण (फार्मा, ।ए, कृषि), रक्षा सहयोग का विस्तार (संयुक्त उत्पादन), शिक्षा और सांस्कृतिक आदान–प्रदान (छात्र विनिमय, योग, मीडिया), और बहुपक्षीय मंचों (न्छ६ठत्प्ब्ै) में सहयोग को मजबूत करना जैसे उपाय अपनाए जा सकते हैं, जिससे लोगों के बीच सीधा संपर्क बढ़े और आपसी समझ मजबूत हो। भारत के लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा रूस के लोकप्रिय राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन दोनों देशों की मित्रता को आगे बढ़ा सकते हैं क्योंकि दोनों व्यक्तिगत स्तर पर भी मित्रता रखते हैं।

नरेंद्र मोदी और व्लादिमीर पुतिन की दोस्ती (नई राजनीतिक युग की शुरुआत)

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच गहरे व्यक्तिगत और रणनीतिक संबंध हैं, जिसे वे अक्सर "दोस्ती" कहते हैं, और वे कई अंतरराष्ट्रीय मंचों पर एक–दूसरे का समर्थन करते हैं, जो भारत–रूस रणनीतिक साझेदारी को मज़बूत करता है, जिसमें रक्षा, ऊर्जा और व्यापार सहयोग पर जोर दिया जाता है, भले ही वैश्विक स्थिति बदलती रहे।

संबंधों की प्रकृतिः

- व्यक्तिगत केमिस्ट्रीः दोनों नेताओं के बीच एक मजबूत व्यक्तिगत तालमेल है, जिसे अक्सर "पर्सनल केमिस्ट्री" कहा जाता है, और वे कई मौकों पर एक–दूसरे की तारीफ करते रहे हैं।
- रणनीतिक साझेदारीः उनके संबंध भारत–रूस संबंधों के एक नए युग में प्रवेश कर रहे हैं, जो व्यापार, ऊर्जा, रक्षा और वैश्विक मुद्दों पर सहयोग को बढ़ावा देता है।
- पारिवारिक समानताएंः दोनों नेताओं का बचपन गरीबी में बीता और दोनों ही अपने–अपने देशों के शीर्ष पदों पर पहुंचे, जिससे उनके बीच एक जुड़ाव महसूस होता है।

उदाहरणः

यूक्रेन तनाव के बावजूद, दोनों नेताओं ने अपनी दोस्ती के रिश्ते को मज़बूत किया है।

.पुतिन ने पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद मोदी को फोन कर संवेदना व्यक्त की और आतंकवाद के खिलाफ पूर्ण समर्थन का वादा किया।

संक्षेप में, मोदी और पुतिन के बीच की दोस्ती भारत और रूस के बीच मजबूत और भरोसेमंद साझेदारी की नींव है, जो व्यक्तिगत तालमेल और रणनीतिक हितों पर आधारित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. Chenoy] A- M- (2005). रूसदृभारतदृचीनः अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक प्रणाली का पुनर्मूल्यांकन. वर्ल्ड फोकस, अप्रैल, 11दृ16।
2. Gorbachev] M- (1987). पेरेस्त्रोइकाः हमारे देश और विश्व के लिए नया चिंतन. लंदनः कॉलिन्स।
3. Imam] Z- (2001). रूस की विदेश नीति (1991दृ2000). नई दिल्लीः न्यू होराइज़न पब्लिशर्स।
4. Patnaik] A- (2005). प्रिमाकोव से पुतिन तकः रणनीतिक त्रिकोण. वर्ल्ड फोकस, 3दृ10।
5. Shams&ud&din- (2001). भारत और रूसः रणनीतिक साझेदारी की ओर. नई दिल्लीः लांसर बुक्स।
6. Dutt] V- P- (2003). पुतिन का रूस और भारतः एक अवलोकन. वी. डी. चोपड़ा (संपा.), भारतदृरूस संबंधों में नए रुझान. नई दिल्लीः कल्पाज़ पब्लिकेशन।
7. Wishnick] E- (2001). टूटती दीवारों की मरम्मतः ब्रेज़नेव से येल्तसिन तक मॉस्को की चीन नीति. सिएटलः यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन प्रेस।
8. Bakshi] J- (2002). शीत युद्ध के बाद रूसदृचीनदृभारत संबंध. नई दिल्लीः (प्रकाशक)।
9. Banerji] A-] & Bhattacharya] P- (2001). चीन जनवादी गणराज्य पचास वर्ष बादः राजनीति, अर्थव्यवस्था और विदेश संबंध. नई दिल्लीः लांसर।
10. Shambaugh] D- (2000). विश्व को लेकर चीन की सैन्य दृष्टिः द्वंद्वात्मक सुरक्षा. इंटरनेशनल सिक्योरिटी, 24(3), 72दृ89।
11. Keith] C-] & Overholt] W- (2005). चीन की सेना का आधुनिकीकरणः अवसर और सीमाएँ. सैंटा मोनिका, कैलिफ़ोर्नियाः रैंड कॉर्पोरेशन।
12. Li] J- (2000). चीनदृरूस साझेदारी के स्तंभ. ऑर्बिस, 44(4), 428दृ439।
13. Jiali] M- (2003). भारतदृचीनदृरूस में संयुक्त राष्ट्र सहयोग की भूमिका को सशक्त बनाना. चाइना रिपोर्ट, 39(3), 385दृ392।
14. Singh] S- (2003). भारतदृचीनदृरूसः एक रणनीतिक त्रिकोण? वर्ल्ड फोकस, 24(1), 9दृ17।
15. Sakwa] R- (2003). पुतिन की विदेश नीतिः पूर्व की ओर परिवर्तन. जी. गोरोडेट्स्की (संपा.), पूर्व और पश्चिम के बीच रूस. लंदनः फ्रैंककैस।

❑❑❑